>

Title: Issue regarding devaluation of Indian rupee against US Dollar.

डॉ. मुरली मनोहर जोशी (वाराणसी): सभापति जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे एक महत्वपूर्ण विषय को सदन के सम्मुख रखने का अवसर दिया। पिछले कुछ दिनों से यूएस डालर और अन्य विदेशी मुद्राओं के अनुपात में रुपए की कीमत में निरंतर गिरावट आ रही है। पिछले दिनों, मार्च-अप्रैल में करीब आठ प्रतिशत रुपए के मूल्य में गिरावट आई है। आज एक यूएस डालर की कीमत 54 रुपए के करीब हो गई है। सवाल यह है कि रुपए की कीमत निरंतर क्यों गिर रही है और इसके गिरने से देश की अर्थव्यवस्था पर क्या क्या दुष्परिणाम हो रहे हैं? हमें आयात में रुपया अधिक से अधिक देना पड़ रहा है। वित्त मंत्री जी हमेशा कहते रहते हैं कि हमारा क्रूड ऑयल के आयात का जो बिल है, वह बहुत बढ़ा है। अगर यही रफ्तार रही, रुपया ऐसे ही गिरता रहा तो हमें कच्चे तेल के आयात के बिल में बहुत ज्यादा भुगतान करना पड़ेगा। उसके स्वाभाविक दुष्परिणाम हमारी अर्थव्यवस्था पर दिखाई दे रहे हैं। इसका नतीया यह हुआ है कि मुद्रा विस्तार बढ़ा है, महंगाई बढ़ गई है। खाद्यान्न सामग्री यानि महंगाई की दर दस प्रतिशत के करीब आ गई है। वित्त मंत्री जी कह रहे हैं कि यह खतरनाक बात है। एक-एक महीने में जो मुद्रा विस्तार की जो दर बढ़ रही है, खाद्यान्नों की और खासकर सब्जियों की, वह आम आदमी की जेब पर भारी बोझ है।

सवाल यह है कि ऐसा क्यों हो रहा है, हमारा बाज़ार निरंतर क्यों गिर रहा है? आरबीआई और वित्त मंत्रालय रुपए को गिरने से रोकने के बारे में क्या योजना बना रहे हैं? क्या इसका सीधा असर हमारी विदेशी मुद्रा भंडार पर नहीं पड़ेगा? अगर आपको रुपए का मूल्य बढ़ाना होगा, तो आपका जो विदेशी मुद्रा भंडार है, उसे घटाना होगा। इसके क्या परिणाम होंगे, आपका फिसकल डेफिसिट कहां जाएगा? जो आपने बजट में और अपने भाषणों में सदन को आश्वस्त किया था, वह कहां जाएगा, उसकी रफ्तार क्या है? सवाल यह है कि आप बार-बार यह कहते आ रहे हैं कि हमने अर्थव्यवस्था में बहुत कुछ सुधार किए हैं और बहुत कुछ करना चाहते हैं। मेरा सदन से और आपके माध्यम से वित्त मंत्री जी से अनुरोध है कि इन प्रश्नों पर गम्भीर चर्चा होनी चाहिए।

आज सारा यूरोप परेशान हो गया है। पहले अमेरिका में मेल्टडाउन हुआ, अब यूरोप में मेल्टडाउन हो रहा है। आप बार-बार कहते हैं कि हम दुनिया से जुड़े हुए हैं। तो आप इस मेल्टडाउन को कब यहां बुलाएंगे, अगर नहीं आने देना चाहते तो इसके लिए क्या कर रहे हैं, कौन से सुधार आप लाना चाहते हैं? आपके आर्थिक सलाहकार ने कहा था कि हम सुधार 2014 से पहले नहीं ला सकते। अभी तक यूपीए वन और टू ने सुधार किए हैं, उसका नतीजा तो यह है कि हमारी अर्थव्यवस्था का सारा संकट निरंतर बढ़ रहा है और शायद 1991 की तरफ हम जा रहे हैं।

वित्त मंत्री जी ने मुझे पत्र लिखा था कि हमारे फेंडामेंटल्स बहुत मजबूत हैं। वे कौन से फेंडामेंटल्स हैं जो मजबूत हैं, क्योंकि वे सारे फेंडामेंटल्स कमज़ोर साबित हो गए हैं। क्या आप भारत की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए बजाए पश्चिमी अर्थव्यवस्था को मानक मानकर कोई भारतीय मॉडल का निर्माण करेंगे, क्या इस तरफ ध्यान देंगे या बराबर उन्हीं सुधारों को लागू करने की कोशिश करेंगे, जिनसे हमारी तबाही हुई है? हम यह उनसे जानना चाहेंगे? वह बार कह रहे हैं कि खतरा है, खतरा है, लेकिन खतरे को टालने के लिए क्या कर रहे हैं? भारत की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए क्या कर रहे हैं? महंगाई को रोकने के लिए क्या कर रहे हैं? हमारे विदेशी मुद्रा भंडार को बचाए रखने के लिए क्या कर रहे हैं? रुपए की कीमत गिरने का मतलब है कि भारत के श्रमिकों के मूल्य का अवमूल्यन किया जा रहा है। यह बहुत खतरनाक बात है।

इस समय न तो हमारे अर्थशास्त्री प्रधान मंत्री जी सदन में उपस्थित हैं, वह चले गए हैं और न ही वित्त मंत्री जी उपस्थित हैं। यह सारा सदन इस बात से सहमत है, हम इतना महत्वपूर्ण प्रश्न उनके सामने रखना चाहते हैं इसलिए मेरा अनुरोध है कि आप इस पर चर्चा सुनिश्चित करें और वित्त मंत्री जी सदन में बताएं कि वह इस बारे में क्या करना चाहते हैं तथा देश में महंगाई को रोकने के लिए और सुधारों के बारे में उनका क्या कथन है, वह हमारे सामने यहां रखें।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN :

Shri Virendra Kumar,

Shri Rajendra Agrawal and

Shri P.L. Punia are permitted to associate themselves with what Dr. Murli Manohar Joshi has said. Sk. Saidul Haque:

...(*Interruptions*)

SHRI BISHNU PADA RAY (ANDAMAN & NICOBAR ISLANDS): Please allow me to speak. ...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, please do not interrupt the hon. Member.